भित्ति चित्रों की जाँच और संरक्षण

ओ.पी. अग्रवाल
रश्मि पाठक

प्रस्तावना

भित्ति चित्रकारी का प्रचलन लगभग प्रत्येक देश में प्राचीन काल से ही चला आ रहा है। प्रारंभिक काल में यह कला अविकसित थी और तकनीक भी काफी साधारण थी जिसमें कि पेन्ट (रोगन) को सीधे पत्थर पर लगा कर चित्र बनाया जाता था । तद्नोपरान्त, अधिक जटिल डिज़ाइन और चित्र दीवारों पर बनाये जाते रहे, जिनमें अक्सर पलस्तर अनेक सतहों द्वारा तैयार किया जाता था । चित्रकारी की संख्या इतनी ज्यादा थी कि आज भी, बड़े पैमाने पर हुई क्षति और विनाश के बावजूद, सैंकड़ों, हज़ारों भित्ति चित्र प्रत्येक राष्ट्र में विद्यमान हैं। भारत और एशिया के अन्य देशों का भी इसमें अपना एक योगदान है।

जब एक चित्र बनाया जाता है तो कुछ समय तक तो वह अविकल और नवीन रहता है परन्तु समय के साथ-साथ उसमें विघटन और ह्रास शुरू हो जाता है। इसीलिए इन चित्रों के संरक्षण की आवश्यकता है। भाग्यवश संरक्षण के प्रति चौतरफा रूचि जागृत हो रही है।

बहुत से लोगों द्वारा एक ऐसी पुस्तक की आवश्यकता अनुभव की जा रही थी जिसमें, विशेषत: एशिया के देशों के संदर्भ में, साधारण भाषा में भित्ति चित्रों की जाँच और संरक्षण के बारे में वर्णन हों ।

यह पुस्तक दो भागों में विभक्त है। प्रथम भाग सामग्री और तकनीकों, विघटन के प्रकार और महत्वपूर्ण जाँच की तकनीकों के बारे में सामान्य जानकारी देता है। हमने यहाँ केवल उन्हीं तकनीकों को सम्मिलित किया है, जिनका सीधा सम्बन्ध संरक्षण से है।

भाग-दो संरक्षण प्रक्रियाओं से सम्बन्धित है। हमारे द्वारा किये गये कार्य के परिणामों और प्रेक्षणों को, जहां उपयुक्त हुआ, इसमें सम्मिलित करने का प्रयत्न किया गया है।

भित्ति चित्रों को वियोजित कर स्थानान्तरित करने के विषय पर एक अलग अध्याय इस पुस्तक में सम्मिलित किया गया है। हममें से एक (ओ. पी. अग्रवाल) भित्ति चित्रों के विभिन्न स्थलों, जैसे रंगमहल, चम्बा, देवी चित्रण कुल्लू, फौडाँग मठ इत्यादि स्थलों से स्थानान्तरण के कार्य से सम्बद्ध रहा है। इस अनुभव के परिणाम का इस अध्याय में वर्णन है।

इस पुस्तक को तैयार करने में हमें बहुत से लोगों और संगठनों से सहायता मिली है। इनमें सर्वोपरि है फोर्ड फाउंडेशन, जिसकी वजह से इस पुस्तक का व्यापक वितरण सम्भव हुआ है। हम उनके आभारी हैं।

INTACH

इटैक (यू.के.) ट्रस्ट की सहायता से किये गये कई वर्षों तक चलने वाले सर्वेक्षण के माध्यम से हमें भित्ति चित्रों से सम्बन्धित समस्याओं, उनमें होने वाले परिवर्तन तथा संरक्षण की आवश्यकताओं के बारे में ज्ञान प्राप्त हुआ । हम ट्रस्ट की उदारता के लिए उनके आभारी हैं । हमें श्रीमती ऊषा अग्रवाल, डायरेक्टर म्युजियम डेवलपमैंट सैल, इटैक से सहायता मिली है, जिनके साथ हमने समय-समय पर विचार-विमर्श किया । हम उनके आभारी हैं ।

हम श्रीमती राधम्मा का भी धन्यवाद करना चाहेंगे जिन्होंने इस किताब को कई बार टाइप किया है। उन्होंने यह काम बिना किसी शिकायत के इच्छापूर्वक किया ।

पाठ-1 में प्रस्तुत किए गए आला-गीला तकनीक के फोटोग्राफ श्री संजय धर द्वारा तैयार किए गए हैं, जिनके हम आभारी हैं । अधिकांश फोटोग्राफ श्री रामसागर प्रसाद द्वारा प्रस्तुत किए गए हैं जो कि इटैक इंडियन कंजर्वेशन इंस्टीट्यूट, लखनऊ में फोटोग्राफर के रूप में कार्यरत हैं, हम उनके भी आभारी हैं। कुछ रेखाचित्र विनीता गोयल द्वारा किए गए हैं, हम उन्हें धन्यवाद देते हैं।

हम संदीप प्रकाशन को भी धन्यवाद देते हैं, जिन्होंने इस कार्य को आकर्षक रूप में बहुत ही कम समय में प्रकाशित किया ।

लखनऊ, 2002

— ओ.पी. अग्रवाल

— रश्मि पाठक

INTACH